चेतना एवं आधुनिकीकरणः हिन्दू एवं मुस्लिम महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन

(आगरा नगर के विशेष संदर्भ में)

दयालबाग शिक्षण संस्थान, दयालबाग, आगरा।

की

पीएच.डी. (समाजशास्त्र) की उपाधि हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

(2016–17)

संकाय प्रमुख–
प्रो0 एस0पी0 श्रीवास्तव
विभाग– अर्थशास्त्र
समाज विज्ञान संकाय

विभागाध्यक्ष–
प्रो0 पूर्णिमा जैन
विभाग– समाजशास्त्र एवं
राजनीति विज्ञान
समाज विज्ञान संकाय

निर्देशिकाः
प्रो0 बन्दना गौड़
विभाग– समाजशास्त्र एवं
राजनीति विज्ञान
समाज विज्ञान संकाय

शोधार्थिनीः
शालिनी राजपूत

दयालबाग शिक्षण संस्थान, दयालबाग, आगरा।
(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा। 282005

भूमिका

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी ही नहीं बल्कि एक चिंतनशील, विवेकशील प्राणी भी है। मनुष्य की चिंतन प्रणाली का आधार उसकी चेतना से विकसित होता है तथा मनुष्य के अन्तर्गत आधुनिक चेतना का विकास विविध प्रकार के समाजों के सोपान से होते हुए हुआ है। समाजशास्त्र के संस्थापक ऑगस्ट काम्टे ने भी मानव मस्तिष्क के बौद्धिक विकास की यात्रा को त्रिस्तरीय रूप में अभिव्यक्त किया है तथा मानव चेतना या बौद्धिक विकास की अंतिम अवस्था को प्रत्यक्षवाद से संज्ञायित किया है जिसका सरोकार आधुनिकता से है। आधुनिकीकरण एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है जिसका प्रारम्भ ज्ञानोदय काल के पश्चात से प्रारम्भ होता है। ज्ञानोदय काल से पूर्व मानवीय चेतना पूर्ण रूप से धार्मिक हठवादिता और पारम्परिक मूल्यों से संचालित होती रही है तथा जैसे–जैसे सामूहिक चेतना में परिवर्तन आया वैसे–वैसे ही समाज आदिम तथा सरल अवस्था से गुजरते हुए आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर हुआ है। समाज का सदस्य होने के कारण मनुष्य समूहगत व्यवहार प्रतिमान, विश्वासों, मूल्यों को सामूहिक रूप से साझा ही नहीं करता बल्कि सामूहिक स्वीकृति तथा मान्यताओं के आधार पर उनमें परिमार्जन भी लाता है। भारतीय समाज में भी आज हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। सामाजिक अन्तर्विरोधों के परिणामस्वरूप दोनों ही समुदायों में एक नवीन प्रकार की चेतना का विकास हुआ है। भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ उपनिवेशवाद से होता है जब अंग्रेजी शासन ने भारतीय सामाजिक संरचना में नवीन चेतना को प्रविष्ट कराया।

भारतीय समाज में आधुनिकीकरण का प्रभाव सभी समुदायों पर एक समान प्रतीत नहीं होता है क्योंकि सभी समाजों व समुदायों में चेतना का अभ्युदय उस समाज की संरचना से आर्विभूत होता है। भारतीय सामाजिक संरचना में पूंजीवादी व्यवस्था के प्रभावस्वरूप ही आधुनिकीकरण का जन्म होता है जिसे लाने का श्रेय प्रमुख रूप से औपनिवेशिक शासन को जाता है। पूंजीवादी संरचना के प्रभावस्वरूप विभिन्न समुदायों तथा वर्गों का उदय होता है। एक वर्ग तो

संसाधनों के स्वामित्व पर अपना आधिपत्य स्थापित किए है तथा दूसरा वर्ग जो इस व्यवस्था में अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत है। बुर्जुआ तथा सर्वहारा वर्ग की चेतना भी एकरूपीय नहीं है। प्रायः यह भी देखने को मिला है कि सर्वहारा वर्ग मिथ्या चेतना के वशीभूत होकर अपना उत्थान करने में विफल रहा है। भारतीय समाज में देखा जाए तो स्त्रियों को भी परम्पराओं, रूढ़ियों, प्रथाओं के जाल से बाहर आने का अवसर ही प्रदान नहीं किया गया। पितृसत्तामक व्यवस्था ने भीउनको संसाधनों से अभावग्रस्त ही रखा है जिसके कारण स्त्रियों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के प्रति जो चेतना विकसित हुई वह असंतोषजनक है। स्त्रियां आज भी घर की सीमाओं में ही परम्पराओं का पालन करती नजर आ रही हैं। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में स्त्रियों ने आधुनिक साधनों को तो अपनी जीवनशैली में अपना लिया है लेकिन मानसिक रूप से वह परम्पराओं तथा रूढ़ियों के संवाहक का कार्य कर रही हैं तथा समाजीकरण की प्रक्रिया से अग्रिम पीढ़ी को भी वही संदेश पहुंचा रही हैं जिसे परम्पराओं के माध्यम से उन्होंने अर्जित किया था।

भारत में दो वृहद समुदाय हैं– हिन्दू तथा मुस्लिम। जनसंचार, प्रौद्योगिकी तथा नवीन प्रजातांत्रिक व्यवस्था ने सभी को समान अवसर तो प्रदान किया है लेकिन दोनों समुदायों की स्त्रियों में समान चेतना का विकास नहीं हो पाया है। इसका प्रमुख कारण यह भी हो सकता है कि आधुनिकीकरण प्रक्रिया को आत्मसात करने में दोनों समुदायों की स्त्रियों में भिन्नता हो। भारत में हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था में सुधार लाने का श्रेय आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को माना जा सकता है जिसमें महान समाज सुधारक राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द विद्यासागर, दयानंद सरस्वती तथा डा0 बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का सराहनीय योगदान रहा है लेकिन मुस्लिम समुदाय में इस प्रकार के प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा नेतृत्व का अभाव रहा है जिसने स्त्रियों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया हो, जिससे उनमें नवीन चेतना का संचार हो जो आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से परिपूर्ण हो। स्वतंत्रता के पश्चात संवैधानिक आधारभूत प्रणाली ने उत्थान के लिए प्रयास किए परन्तु दुर्भाग्यवश परम्पराओं तथा रूढ़ियों से जकड़ी इस व्यवस्था

ने स्त्रियों के स्वतंत्र चेतना के विकसित होने का मार्ग ही प्रशस्त नहीं किया। लेकिन इसका तात्पर्य यह भी नहीं है कि दोनों समुदायों में चेतना तथा आधुनिकीकरण का विकास ही न हुआ हो। दोनों समुदायों की स्त्रियों में चेतना तथा आधुनिकीकरण के स्तर में सम्बन्ध का अध्ययन किया जाएगा।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

चेतना–

चेतना का बोध साधारणतया कुछ जीवधारियों में स्वयं के और अपने आस–पास के वातावरण के तत्वों के ज्ञान होने, समझने एवं उन्हें मूल्यांकन करने की शक्ति व क्षमता से लिया जाता है। चेतना मानव की वह विशेषता है जो उसे जीवित रखती है, जो उसे व्यक्तिगत विषय में तथा अपने बाह्‌य आंतरिक परिवेश के संदर्भ में जागरूकता के माध्यम से ज्ञान कराती है तथा इसी ज्ञान शक्ति से व्यक्ति स्व एवं समाज का निर्माण अन्तःक्रिया के माध्यम से करता है। चेतना के विविध अर्थ हैं। वैज्ञानिक आधार पर चेतना एक अनुभूति है जो मस्तिष्क में पहुचने वाले अभिगामी आवेशों से उत्पन्न होती है। इन आवेगों का अर्थ तुरन्त अथवा बाद में लगाया जाता है। दार्शनिक अर्थ में चेतना व्यक्ति वर्तमान क्रियाओं से सम्बन्धित तत्कालिक ज्ञान का सूचक है। आध्यात्मिक अर्थ में चेतना को शक्ति के स्रोत का एक पुंज माना गया है जिसमें व्यक्ति चेतना के माध्यम से शक्ति पुंज में विलीन होने का प्रयास करता है। इसलिए चेतना में आत्मा की उपस्थिति का भी साक्ष्य है। जब तक आत्मा देह में रहती है तभी तक सम्पूर्ण शरीर में चेतना व्याप्त होती है। आत्मा के चले जाने के पश्चात चेतना भी विलुप्त हो जाती है। चेतनाकोई प्राकृतिक तत्वों का समुच्चय नहीं बल्कि वह आत्मा का ही एक लक्षण है जो परमात्मा रूपी प्रकाश पुंज में विलीन होने का एक साधन है।

चेतना के व्यक्तिगत व्याख्याओं से भिन्न समाजशास्त्रीय विचारधाराओं में चेतना को मानवीय व्यवहार के निष्पादन में सामूहिकता के साथ संश्लेषित करके प्रस्तुत किया गया है।

चेतना को दार्शनिकता के क्षेत्र में सर्वप्रथम मानव मस्तिष्क की अवधारणा के रूप में परिभाषित करने का श्रेय दार्शनिक जॉन लॉक (1690) को दिया जाता है जिसके माध्यम से लॉक ने चेतना को व्यक्तिगत दृष्टिकोंण एवं कल्पनाशीलता से जोड़ दिया है। 19वीं शताब्दी में समाजशास्त्र में चेतना को स्थापित करने का श्रेय प्रमुख समाजशास्त्री इमाइल दुर्खीम और कार्ल मार्क्स को दिया जाता है। दुर्खीम (1912) ने चेतना की व्याख्या सामूहिक चेतना के रूप में की वहीं कार्ल मार्क्स (मार्क्स एण्ड ऐंजल्स 1845–46) ने चेतना की व्याख्या वर्ग चेतना के रूप में की है। दुर्खीम (1933) ने बताया कि समाज के सदस्यों के मध्य संरचनात्मक विभिन्नताऐं होती हैं जो कि श्रम विभाजन के आधार पर होती हैं जिन्हें समाज के सभी सदस्य सामूहिकता कहते हैं। इस सामूहिकता को बनाए रखने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान समान विश्वासों, प्रथाओं, परम्पराओं एवं मूल्यों का होता है। इसी कारण व्यक्ति स्वयं को समाज से जोड़कर देखता है। उससे अलग वह अपना कोई अस्तित्व नहीं मानता है। 20वीं शताब्दी में चेतना को प्रघटनाशास्त्र के साथ जोड़कर देखा जाने लगा जिसका मुख्य उद्देश्य चेतना के आधार पर सामाजिक संरचना का वर्णन करना है। इसमें शूट्ज (शूट्ज, 1967ः शूट्ज एण्ड लकमैन, 1973) तथा वर्जर तथा लकमैन, (1966) ने ज्ञान को सामाजिक चेतना का आधार बताया है। मनुष्य के व्यवहार निष्पादन में समाजिकता की सबसे बड़ी भूमिका होती है। चेतना को सामूहिक चेतना के रूप में बताया गया है जो कि सम्पूर्ण सामान्य विश्वास व मनोभाव होते है जिन्हें समाज के सदस्य होने के नाते व्यक्ति प्राप्त करता है तथा उन्हें साझा करता है। यह पूर्णतः व्यक्तिगत विशिष्ट अनुभव से भिन्न होता है तथा इसको समाज के सदस्य होने के नाते व्यक्ति महसूस करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि चेतना एक अवलोकनीय तथ्य है जिसमें आत्मनिरीक्षण, आत्मजागरूकता, बुद्धिमत्ता तथा दूसरों के साथ रिश्ते को अनुभव करने की क्षमताओं के गुणों का समावेशन है। संक्षेप में चेतना एक ऐसा परिपेक्ष्य है जिससे स्व एवं समाज दोनों की व्याख्याऐं की जाती हैं जो कि सदैव परिवर्तनशील एवं गतिमान अवस्था में होती हैं।

आधुनिकीकरण–आधुनिक युग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में युगांतकारी परिवर्तन हुऐ हैं, जिसके चलते सामाजिक और आर्थिक जीवन में अनगिनत परिवर्तन हुए हैं और यह परिवर्तन अनवरत रूप से विश्वस्तर पर आज भी चल रहा है। इसी परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिऐ समाज वैज्ञानिकों ने आधुनिकीकरण जैसी अवधारणा का प्रयोग किया। इसी संदर्भ में कुछ समाजशास्त्रियों ने आधुनिकीकरण को एक प्रक्रिया माना है तो कुछ ने इसे प्रतिफल के रूप में स्वीकार किया है।[1] आईजेनस्टॉट (Eisenstadt, 1969) के शब्दों में ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिकीकरण एक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्थाओं की ओर परिवर्तन की प्रक्रिया है जो 17वीं से 19वीं शताब्दी तक पश्चिमी यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका में और 20वीं शताब्दी तक दक्षिणी अमेरिका और एशिया व अफ्रीका में विकसित हुई।

इस सम्बन्ध में**अलातास (Alatas,** 1972**)** ने कहा कि आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान का समाज में प्रचार–प्रसार होता है, तथा व्यक्तियों के स्तर में सुधार होता है समाज अच्छाई की ओर बढ़ता है। आईजेनस्टॉट के विचार में समाज आधुनिकीकरण, समाज की संरचना एवं जनांकिकी पहलुओं में परिवर्तन है। कार्ल डॉयच (Karl Deutsch, 1961) ने आईजेनस्टॉट के इस विचार का समर्थन किया है।**रस्तो एवं वार्ड** (Rustow and Ward, 1964)के विचार में आधुनिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत वैज्ञानिक ज्ञान मानवीय जीवन के उत्थान के लिऐ प्रयोगकिये जाते हैं।**जेम्स ओकॉनेल** (James O''Connell, 1965) ने आधुनिकीकरण के अन्तर्गत चलने वाली प्रक्रियाओं को तीन भागों में बाँटा है–

1. आधुनिकीकरण एक ऐसा वैज्ञानिक मनोभाव है कि व्यक्ति निरंतर घटनाओं के कारणों की वैज्ञानिक खोजबीन करता रहता है जिसे उन्होंने खोजी मनोवृत्ति कहा है।

2. खोजी प्रवृत्ति के चलते व्यक्ति सामाजिक समस्याओं को सुलझाने के लिऐ नये–नये उपकरणों एवं प्रविधियों को ईजाद करता है जिसके फलस्वरूप लोगों की अंधविश्वासीमनोवृत्ति में कमी आई है।
3. आधुनिकीकरण के चलते सामाजिक संरचना में लोचपन एवं खुलापन आता है। लोग हमेशा नई चीजों को स्वीकार करने के लिऐ तत्पर रहते हैं। आगे लेखक ने आधुनिकीकरण को और स्पष्ट करते हुए बताया है कि इसके द्वारा समाज अपने पुरातन सामाजिक संरचनाओं एवं आर्थिक मूल्यों से अलग होकर नये परिवेश में प्रवेश करता है।

आधुनिकीकरण के सम्बन्ध में **मारियन जे लेवी**(Marion J. Levy, 1955) का कथन है कि मात्र प्रौद्योगिक वृद्धि को ही मूलतः आधुनिकीकरण कहा जाना चाहिए। उनके अनुसार शक्ति के जड़ स्रोतों का उपकरणों द्वारा महत्तम प्रयोग ही आधुनिकीकरण है कोई समाज कितना आधुनिक है वह इस बात पर निर्भर करता है कि उस समाज में शक्ति के जड़ स्रोतों जैसे–पैट्रोल, कोयला, गैस, जल, विद्युत इत्यादि तथा यन्त्रों का लोगों के हित में कितना प्रयोग होता है। भारतीय समाजशास्त्री **योगेन्द्र सिंह**(Yogendra Singh, 1978) आधुनिकीकरण को एक सांस्कृतिक प्रत्यय के रूप में स्वीकार करते हैं इसके अन्तर्गत उन्होंने तार्किक अभिवृत्ति, सार्वभौम दृष्टिकोंण, परानुभूति, वैज्ञानिक विश्वदृष्टि, मानवता, प्रौद्योगिक प्रगति इत्यादि को सम्मिलित किया है। **डेनियल लर्नर**(Daniel Lerner, 1966) ने अपनी पुस्तक The Passing of Traditional Society में बताया है कि आधुनिकीकरण के अन्तर्गत निम्न लिखित प्रक्रियाऐं एवं प्रवृत्तियां सम्मिलित हैं– (1) नगरीकरण में वृद्धि, (2) आधुनिक शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार और (3) संचार के साधनों में वृद्धि, एवं अर्थपूर्ण विचारों का अधिकतम आदान–प्रदान होना और घ. आर्थिक

1- Ref. 1. Singh, J.P., (2012), "Adhunik Bharat me Samajik Parvartan", PHI learning Pvt. Ltd. 306

विकास एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।**लर्नर** ने उपर्युक्त विशेषताओं को शक्ति, तरुणाई, दक्षता एवं तार्किकता के रूप में व्यक्त किया है। उन्होंने एक मनःस्थिति, प्रगति की अपेक्षा, आर्थिक विकास की क्षमता, परिवर्तित होने की तत्परता, गतिशीलता, उच्च सहभागिता एवं परानुभूति को आधुनिकीकरण का प्रमुख तत्व माना है।

महान समाजशास्त्री **आईजेनस्टॉट** (Eisenstadt, 1969) ने अपनी पुस्तक Modernization; Protest and Change में कहा है कि आधुनिकीकरण आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में परिवर्तन है। उनके अनुसार प्रौद्योगिकी का उच्च स्तर, वयस्क मताधिकार तथा प्रजातंत्र में भागीदारी, अनुकूलन की क्षमता तथा परानुभूति में वृद्धि, संगठनों के आकार में वृद्धि एवं जटिलता तथा नगरीकरण में वृद्धि आधुनिकीकरण के मुख्य लक्षण हैं। **श्यामाचरण दुबे** (S.C. Dube, 1988) आधिुनिकीकरण को मूल्यों से मुक्त मानते हैं वे इसके लिए कोई एक निश्चित मॉडल नहीं मानते हैं। उनके अनुसार आधुनिकीकरण के फलस्वरूप व्यक्तियों में तर्क, परानुभूति, गतिशीलता एवं सहभागिता बढ़ती है। उन्होंने आधुनिकीकरण के अन्तर्गत मुख्यतः तीन बातों का उल्लेख किया है वे हैं– समस्याओं के हल के निमित्त जड़ शक्ति का प्रयोग, जटिल संगठनों का निर्माण एवं जटिल संगठनों के कार्य करने के निमित्त व्यक्ति, समाज तथा संस्कृति में परिवर्तन।**एम.एन. श्रीनिवास** (M.N. Srinivas, 1977) आधुनिकीकरण को एक तटस्थ शब्द नहीं मानते हैं। उन्होंने आधुनिकीकरण के अन्तर्गत भौतिक संस्कृति, सामाजिक संस्थाओं तथा ज्ञान, मूल्य एवं मनोवृत्तियों को क्षेत्र में सम्मिलित किया है।

समस्या का कथन

प्रस्तुत शोधकार्य में चेतना तथा आधुनिकीकरण के माध्यम से हिन्दू तथा मुस्लिम महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। हिन्दू तथा मुस्लिम समुदायों की महिलाओं में

आधुनिकीकरण से किस प्रकार की चेतना का विकास हुआ, इस शोधकार्य के अन्तर्गत अध्ययन किया जाएगा। भारतीय समाज में इन दोनों ही समुदायों में पितृसत्तामक व्यवस्था का प्रभाव रहा

है जिससे स्त्रियों में स्वतंत्र रूप से चेतना का विकास नहीं हो पा रहा है तथा परम्परा एवं आधुनिकीकरण के अतःद्वंद के कारण संक्रमण के दौर से गुजर रही हैं। आधुनिकीकरण ने समतामूलक अधिकारों की नींव रखी तथा धार्मिक उन्माद की जगह तर्कवाद तथा विज्ञानवाद पर बल देते हुए प्रजातांत्रिक मूल्यों व चेतना की नींव रखी। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक नियमों तथा सामुदायिक व्यवहार प्रतिमानों, मूल्यों, विश्वासों में परिवर्तन आया है इस कारण हिंन्दू तथा मुस्लिम समुदायों की स्त्रियों की परस्पर अंतक्रियात्मक चेतना में परिवर्तन आया है। इसके अतिरिक्त यह भी दृष्टिगोचर होता है कि आज एक तरफ तो वैज्ञानिक तटस्थता, केंद्रीयता और सम्पूर्णता की बात की जा रही है वहीं दूसरी ओर मौलिकतावाद के आने की वजह से धार्मिक उन्माद की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस कारण आधुनिकीकरण किस प्रकार से इन दोनों समुदायों में धर्मनिरपेक्षीकरण को लाने में किस रूप में प्रभावशाली हैं तथा इससे दोनों ही समुदायों की स्त्रियों में चेतना तथा आधुनिकीकरण का स्वरूप कैसा है, को अध्ययन समस्या के रूप में चयन किया जाएगा।

अध्ययन का महत्व

वर्तमान अनुसंधान कार्य की महत्ता के रूप में यह दर्शाया जा रहा है कि चेतना तथा आधुनिकीकरण ने किस प्रकार से हिन्दुओं तथा मुस्लिम महिलाओं में समाज के पुनर्संयोजन में नवीन प्रतिमानों को स्थापित किया है। चेतना से सम्बन्धित अध्ययनों पर दृष्टिपात करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि अपनी पद्धति में यह मात्र दार्शनिक एवं सैद्धांतिक अध्ययन ही नहीं वरन् समाजशास्त्रीय भी है। इस प्रकार के अध्ययन से भविष्य में चेतना से सम्बन्धित अध्ययन को समाजशास्त्रीय परिधि में किए जाने के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा आधुनिकीकरण के प्रति परम्परागत व नवीन मूल्यों को समझने की योग्यता विकसित होगी। हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय की महिलाओं की सामाजिक परिस्थिति में परिवर्तन में चेतना तथा आधुनिकीकरण अहम भूमिका अदा कर रहे हैं इसी लिए चेतना व आधुनिकीकरण से सम्बन्धित अध्ययनों के प्रति यह अध्ययन भविष्य में एक महत्वपूर्ण तथा सार्थक दिशा प्रदान करने में एक आधार प्रस्तुत करेगा।

साहित्य का पुनरावलोकन

- **कूले (1907),** अपने लेख में लेखक ने सामाजिक चेतना बताया है। यहाँ यह स्पष्ट किया है कि व्यक्ति की व्यक्तिगत चेतना सामाजिक चेतना से भिन्न नहीं होती है अपितु यह उससे जुड़ी हुई होती है। अपने इस लेख में कूले ने व्यक्तिगत और सामाजिक चेतना को आर्केष्ट्रा की संगीत की धुनों की तरह बताया है जो कि एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी परस्पर जुड़ी हुई होती हैं। जैसे संगीत की इस धुनों में अन्तर नहीं किया जा सकता। एक दूसरे से अलग इनका कोई अस्तित्व नहीं होता। उसी प्रकार व्यक्तिगत चेतना कोसामाजिक चेतना से अलग नहीं किया जा सकता और एक दूसरे से अलग होकर इनका कोई अस्तित्व नहीं है।
- **पाणिक्कर (1961)** प्रस्तुत पुस्तक ''हिन्दू सोसाइटी एट द क्रॉस रोड्स'' में लेखक ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विधिक नियमों द्वारा हिन्दू समाज में होने वाले परिवर्तनों का वर्णन किया है। लेखक द्वारा उल्लिखित किया गया है कि स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व एवं पश्चात हिन्दू समाज अनेक सामाजिक बुराइयों से ग्रसित था जिनका निवारण विधिक संहिताओं द्वारा किया गया है। हिन्दू समाज में अस्पृश्यता को समाप्त करने, विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन देने, समाज में महिलाओं को पैतृक सम्पत्ति एवं पति की मृत्यु के उपरान्त पति की सम्पत्ति पर अधिकार देने, जाति व्यवस्था को हतोत्साहित करने के लिए अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन देने के लिए इन्हें संवैधानिक वैधता दी गयी। इस पुस्तक में लेखक द्वारा बताया गया कि हिन्दू महिलाओं की स्थिति मुस्लिम महिलाओं तथा इसाई
- महिलाओं से ज्यादा दयनीय थी जिसे संविधान द्वारा सुदृढ़ करने का प्रयास किया गया। यहाँ लेखक द्वारा हिन्दू समाज को महान बताते हुए इसे विश्व के प्राचीनतम समाजों में से एक बताया जो अपनी जिजीविषा के द्वारा विश्व में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता रहा है।
- **श्रीनिवास (1966)** अपनी पुस्तक मैसूर नरसिम्हाचार श्रीनिवास का मैसूर के कुर्ग समाज पर एक महत्वपूर्ण क्षेत्र अध्ययन है। अपने कार्य में श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण

एवं लौकिकीकरण के माध्यम से भारतीय समाज विशेषकर हिन्दू समाज में होने वाले परिवर्तनों का वर्णन किया है। हिन्दू समाज जो कि जाति प्रथा, संयुक्त परिवार, संस्कारों एवं परम्पराओं में बंटा हुआ था इन सभी पर संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण एवं लौकिकीकरण का प्रभाव व्यापकरूप से हुआ है। ये तीनों ही प्रक्रियाऐं जो एक दूसरे से भिन्न मालूम होती हैं परन्तु आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। इन्होंने भारतीय समाज में तीव्रगामी परिवर्तनों को जन्म दिया जिससे अनेक शताब्दियों से स्थैतिक रहे भारतीय समाज में तीव्र गति से परिवर्तन हुए हैं। अपने इस कार्य में श्रीनिवास ने ब्रिटिश शासन से पूर्व, शासन के समय एवं पश्चात की अवस्थाओं का वर्णन किया है।

- **गस्फील्ड (1967)** अपने लेख में लेखक द्वारा परम्परागत तथा आधुनिकता के मध्य ध्रुवीय अंतर का आलोचनात्मक दृष्टिकोंण से अध्ययन किया है। परम्परागत समाज तथा आधुनिक समाज को एक–दूसरे का परस्पर विरोधी तथा संघर्षात्मक समाज कहा जाता है परन्तु इस लेख में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि परम्परा सदैव ही आधुनिकता की विरोधी नहीं होती अपितु आधुनिकता तथा परम्परा दोनों एक साथ एक ही समाज में उपस्थित होते हैं। परम्पराओं में आधुनिकताओं की प्रक्रियाओं के साथ–साथ कुछ परिवर्तन आ जाता है जो कि पूर्व स्थिति से कुछ भिन्न होते हैं। लेखक ने यह भी माना कि आधुनिकता तथा परम्पराओं के मध्य सदैव ही संघर्ष तथा विरोधाभासी सम्बन्ध महज भ्रांत अवधारणाऐं हैं जिन्हें परिवर्तित होने की आवश्यकता है क्योंकि समाज परम्परा तथा आधुनिकता के उचित मेल से ही अपना विकास कर सकता है।

- **हुसैन(1969)** अपने लेख में लेखक द्वारा इस्लाम धर्म तथा इस्लामिक समाज को आधुनिकता के प्रति जागरूक करने हेतु विश्व में अलग–अलग समाजों में हुए समाज सुधारक आंदोलनों का वर्णन किया है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि प्रारम्भिक इस्लामी समाज वर्तमान समाज की भांति नहीं था अपितु अपनी धार्मिकता एवं बौद्धिकता के मेल से यह केवल जनजातीय समाजों में ही नहीं अपितु तत्कालीन समाज में अपनी गहरी जड़े जमाए था परन्तु समय परिवर्तन होने के साथ–साथ इस्लाम का पतन प्रारम्भ हुआ

जिसका मुख्य कारण निरंकुश शासन, शरीयत का गलत प्रसार, कुरान की अनुचित रूप से व्याख्या तथा अंधविश्वास था जिसने इस्लामी समाज का विश्व समुदाय से पतन प्रारम्भ किया। लेखक का मानना है कि इस्लामी समाज को अपनी पुरानी साख स्थापित करने के लिए तर्क एवं वैज्ञानिकता पर ज्यादा ध्यान देना होगा तथा जैसा कि समाज सुधारक आंदोलनों में कहा गया कि कुरान एवं शरीयत की तर्क एवं वैज्ञानिकता के आधार पर पुनर्व्याख्या करनी होगी। कुरान तर्क एवं विज्ञान में विश्वास रखता है परन्तु कुछ कट्टरवादियों तथा कुछ निरंकुश शासकों के गलत प्रसार से मुस्लिम कुरान की उचित व्याख्या भूल चुके हैं इसलिए समाज सुधार के लिए आवश्यक है कि वैज्ञानिकता के आधार पर कुरान की पुनर्व्याख्या की जाए।

- **सिद्दकी (1970)** अपने लेख में लेखक द्वारा मुस्लिमों के आधुनिकीकरण के प्रति अपने दृष्टिकोंण को प्रस्तुत किया है आधुनिक मानव व मध्यकालीन मानव के मध्य तर्क व विश्वासों की तुलना करते हुए मुस्लिमों को अपनी पहचान बनाए रखने के लिए एवं मिशनरियों के प्रभाव से अपने धर्म एवं समाज की रक्षा के लिए मुस्लिम समाज सुधारकों ने तर्क एवं आधुनिकता के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाने पर जोर दिया। मुस्लिम समाज सुधारकों का यह भी मानना है कि विश्वासों की सरलता को अपनाने के साथ ही अंधविश्वासों तथा मध्ययुगीन प्रथाओं एवं परम्पराओं को त्यागना अत्यंत आवश्यक है। मुस्लिम समाज को अपने धर्म को भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के साथ चलना होगा अन्यथा यह प्रक्रिया मात्र दिखावा होगी। मुस्लिम समाज सुधारकों का मानना है कि मुस्लिम समाज का आधुनिकीकरण पश्चिमी समाज की परछाई नहीं है अपितु अपने समाज की पुनर्स्थापना करने तथा उसमें निहित बुराइयों को समाप्त करने के लिए यह आवश्यक है।
- **रहमान (1982)** अपनी पुस्तक को लेखक द्वारा चार भागों में विभक्त कर मुस्लिम समाज के आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ेपन का कारण जानने का प्रयास किया गया है। अपनी इस कृति में लेखक द्वारा एक नवीन प्रविधि का प्रयोग किया गया है जिसे उन्होंने

''डबल मूवमेंट थ्योरी'' का नाम दिया है। इस विधि के अन्तर्गत रहमान फैजलुर ने वर्तमान समय से मध्यकालीन समाज तक तथा फिर मध्यकालीन समाज से वर्तमान समाज तक का अध्ययन किया। लेखक ने यह बताया कि इस्लामी समाज के मूल्यों एवं उनके लक्ष्यों को आधुनिक तथा नवीन शिक्षा व्यवस्था से जोड़ने के लिए यह आवश्यक है कि कुरान की पुनः व्याख्या की जाए। इसी माध्यम से ही इस्लामी समाज को आधुनिकता से जोड़ा जा सकता है।

- **इंजीनियर,(1992)** अपनी पुस्तक में लेखक ने मुस्लिम महिलाओं के इस्लाम धर्म में अधिकारों के प्रति अपना पक्ष रखा है। लेखक ने महिलाओं के विभिन्न अधिकारों जैसे लैंगिक समानता का अधिकार, मातृत्व अधिकार व तलाक का अधिकार के प्रति अपना दृष्टिकोंण प्रस्तुत किया है। लेखक ने अपने लेखन में लैंगिक समानता के प्रति अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि कुरान में महिला व पुरुष दोनों में से न तो कोई निम्न है और न कोई श्रेष्ठ। 'तकवा' के बिना श्रेष्ठता सिद्ध करने का कोई पैमाना नहीं है। कुरान आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं को भी पुरुषों के समान अधिकार देती है। महिलाओं का शोषण समाज द्वारा निर्मित है कुरान में इसका कोई वर्णन नहीं है। लेखक ने शरीयत कानून की अपरिवर्तनीयता को भी ध्यानसंगत किया है। शरीया कानून कुरान का अभिन्न अंग है परन्तु कुछ कट्टर अनुयाइयों ने समय व स्थान के साथ इसे अपरिवर्तनीय बना दिया है जिनसे महिलाओं के शोषण में वृद्धि हुई है।
- **खान (1996)** अपनी पुस्तक में लेखक ने मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति पर अपना प्रकाश डाला है। मुस्लिम सिद्धांतों के अनुसार मुस्लिम महिलाओं के परिवार में स्थिति, समाज व अर्थव्यवस्था में उनकी स्थिति पर एक प्रकाश डालती है। यह पुस्तक महिलाओं की परिवार में स्थिति की विवेचना, लड़की की स्थिति लड़की को अपना जीवन साथी चुनने का अधिकार, पति के समक्ष पत्नी का अधिकार एवं माँ के अधिकार के रूप में करती है।

- **रैडिस (1999)** अपनी पुस्तक में लेखक ने स्वामी विवेकानंद के हिन्दू समाज के सामाजिक और धार्मिक विकृतियों के समक्ष उनके आदर्शों को प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक शिकागो के धर्म सम्मेलन में पश्चिमी धार्मिक विद्वानों एवं स्वामी विवेकानंद के हिन्दू धर्म पर विचारों का एक समन्वय प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में लेखक द्वारा उल्लिखित किया गया है कि शिकागो के धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद ने हिन्दू धर्म की व्याख्या वैदिक रीति–रिवाजों के आधार पर न करके वैदिक तत्व मीमांसा के आधार पर की है जिसके अनुसार हिन्दुत्व को एक ऐसा धर्म माना जाता है जो कि विश्व के सभी धर्मों को अपने में समाहित करने की विशेषता रखता है। स्वामी विवेकानंद के लिए आधुनिकता का तात्पर्य बाहरी दिखावा न हो कर शारीरिक एवं मानसिक विचारों में परिवर्तन करना है। इसी तथ्य को आधार मानकर स्वामी विवेकानंद ने हिन्दू धर्म के आधुनिकीकरण द्वारा वेद एवं योग को अपनाने के साथ–साथ उसमें निहित बुराइयों को समाप्त करना है।
- **स्मिथ (2003)** अपनी पुस्तक में लेखक ने हिन्दुत्व को उच्चतम गत्यात्मक वैश्विक दृष्टि के युक्त धर्म के रूप में बताया है जो कि आधुनिकता की वैश्विक अवधारणा को चुनौती देता है। इसमें लेखक ने हिन्दुत्व तथा आधुनिकता के प्रति आलोचनात्मक परन्तु संयमित दृष्टिकोंण प्रस्तुत किया है। लेखक ने अपने दृष्टिकोंण में बताया है कि यद्यपि हिन्दू धर्म ने आधुनिकता के अनुसार स्वयं को परिवर्तित किया है परन्तु पश्चिमी धारणा रही आधुनिकता ने भी स्वयं को हिन्दू धर्म के अनुसार परिवर्तित किया है। हिन्दू समाज एक तरफ तो आधुनिकता की दिशा में आगे बढ़रहा है तो वहीं दूसरी ओर वही समाज लैंगिक भेद–भाव से जूझ रहा है जिसमें एक आधुनिक महिला को परम्परागतरूप से जीवन–यापन करने के लिए विवश किया जाता है। यह पुस्तक आर्यों के आगमन के साथ–साथ हिन्दुत्व के उदय का भी वर्णन करती है।
- **झा (2005)**, अपनी पुस्तक में लेखक ने Multiple methodology का प्रयोग किया है। उनके अध्ययन के मुख्य उद्देश्य बिहार राज्य की दरभंगा जिले की महिलाओं में

आधुनिकीकरण के प्रति विचारों को जानना है तथा लेखक द्वारा इस पुस्तक में मुस्लिम महिलाओं की आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के पिछड़ेपन के प्रति एक व्यावहारिक दृष्टिकोंण प्रस्तुत किया है और यह बताया है कि किस प्रकार महिलाओं की नई पहचान का उदय होता है व उनकी पुरानी पहचान लुप्त हो जाती है। यह पुस्तक महिलाओं के आधुनिकीकरण तथा उनकी स्थिति में आये परिवर्तन के प्रति नियोजनकर्ताओं का ध्यान आकर्षित करती है।

- **सालिबा, एलन तथा होबार्ट (2005)** अपनी पुस्तक में लेखिका पश्चिमी विद्वानों द्वारा बनाई गयी इस्लामी समाजों के प्रति इस अवधारणा को तोड़ने का प्रयास करती हैं कि मुस्लिम समाज में महिलाओं को प्रताड़ित किया जाता है उन्हें सीमान्त माना जाता है। लेखिका यह मिथक तोड़ने का प्रयास करती हैं कि इस्लामी समाज में बुर्के का अर्थ महिलाओं को शोषण है परन्तु इसका तात्पर्य यह भी नहीं है कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं या उनकी स्थिति पुरुषों के समानसुदृढ़ हैं। अपने इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए लेखिकाओं ने बांग्लादेश, यमन, ईरान, लेबनान इत्यादि में मुस्लिम महिलाओं के संघर्ष, उनको शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा जाना उनके जीवन का

  संघर्ष के एक प्रतिरूप में प्रदर्शित किए हैं जो कि मुस्लिम महिलाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार को दर्शाता है परन्तु लेखिका साइमन डी. बुवुआर की पुस्तक 'द सैकण्ड सैक्स' के निर्देशन में यह बताती हैं कि महिलाओं का शोषण सभी धर्मों, सभी वर्गों एवं सभी क्षेत्रों में होता है।

- **सिंह (2006)** अपनी पुस्तक में लेखक द्वारा एकीककरण विधि का प्रयोग किया गया है जिसके अन्तर्गत लेखक ने भारतीय संदर्भ में आधुनिकीकरण को स्पष्ट किया है तथा इस पुस्तक में लेखक ने आधुनिकीकरण से सम्बन्धित मूल अवधारणाऐं, बृहत् व लघु परम्परा तथा विशेष रूप से इस्लाम पर आधुनिकीकरण के प्रभाव को प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में लेखक द्वारा इस्लाम धर्म की भारत में ऐतिहासिकता का वर्णन करते हुऐ इस धर्म पर आधुनिकीकरण के प्रभाव को स्पष्ट रूप से परिलक्षित किया है तथा इस पुस्तक में यह भी

बताया गया है कि किस प्रकार आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा इस्लाम धर्म और मुस्लिम समाज के लोग प्रभावित हुऐ हैं।

- **जावेद, जहाँगीर और बोस (2007),**अपनी पुस्तक में लेखक ने भारतीय अल्पसंख्यकों विशेषकर मुस्लिम अल्पसंख्यकों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं का एक आलोचनात्मक मूल्यांकन तथा वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक समाज के विभिन्न समुदायों के मध्य राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक चरों के मध्य जटिल संघर्षों की समझ का मार्ग प्रदर्शित करती है। अतः यह पुस्तक नियोजनकर्ताओं तथा शैक्षणिक क्षेत्र से सम्बन्धित व्यक्तियों के लिऐ एक अमूल्य स्रोत्र सिद्ध होगी।
- **षाहीन (2009),** अपने लेख में लेखक ने 1857 के बाद के भारत में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करने वाले चार मुख्य कारकों को उजागर किया है। इसमें सर सैयद अहमद खां द्वारा संचालित किया गया आधुनिकीकरण आन्दोलन, महिला शिक्षा, उर्दू पत्रकारिता एवं साहित्य तथा संगठनिक क्रियाकलापों पर प्रकाश डालती है। यह लेख यह बताता है कि यह कारक मुख्य रूप से भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में मुस्लिम महिलाओं की परिस्थिति को प्रभावित करते हैं। इस लेख में लेखक द्वारा 1857 के पश्चात भारत में मुस्लिम समुदाय में मौजूद गम्भीर ऊहापोह की स्थिति का वर्णन करता है जो कि ***इज्जत और जिल्लत***की दो अवधारणाओं पर आधारित है। इन अवधारणाओं का मुस्लिम महिलाओं की स्थिति से निकट सम्बन्ध है।
- **आगाबाबा (2011)** अपने लेख में लेखक द्वारा इस्लाम और आधुनिकता के मध्य सम्बन्ध को दर्शाने के लिए इन्हें दो भागों में बांटा है– आधुनिक इस्लाम और इस्लामी आधुनिकता। लेखक का कथन है कि इस्लाम और आधुनिकता की आकस्मिक भेंट ने इस प्रश्न को जन्म दिया है कि इन दोनों में से उचित क्या है? आधुनिक इस्लाम का तात्पर्य है कि इस्लाम को आधुनिकता के साथ चलना चाहिए इसके लिए धर्म के पुनर्व्याख्या किया जाना आवश्यक है तथा आधुनिक सिद्धांतों को इस्लाम में समावेश किया जाना चाहिए। वहीं इस्लामी आधुनिकता मानती है कि इस्लाम धर्म के सिद्धांतों को आधुनिकता द्वारा अपनाया

जाना होगा। तभी उसे इस्लामरूपी गृह में प्रवेश मिल सकता है। लेखक का मानना है कि सम्पर्ण विश्व में निवास करने वाले मुस्लिम आधुनिकता के तथ्य को जानते हैं परन्तु मुस्लिम देशों में यह नाममात्र के लिए ही है। चूंकि मुस्लिम समाज संस्कृति एवं भाषा के आधार पर अनेक रूपों में विभाजित है अतः आधुनिकता की प्रक्रिया उनके लिए भिन्न–भिन्न रहेगी।

- **क्रिटलर एण्ड ओ (2012)** अपने लेख में लेखक ने चेतना की अवधारणा एवं उनके दृष्टिकोंणों का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में व्याख्या करने का प्रयास किया है। सामान्यतः समाजशास्त्र में चेतना का तात्पर्य सामूहिक चेतना होता है। इस लेख में चेतना के समाजशास्त्रीय रूप की व्याख्या करने के लिए लेखिका ने प्रमुख समाजशास्त्रीय दुर्खीम और कार्ल मार्क्स द्वारा दी गयी अवधारणाऐं क्रमशः सामूहिक चेतना एवं वर्ग चेतना का वर्णन किया है। लेखिका ने चेतना के वर्तमान स्वरूप का वर्णन आलोचनात्मक चेतना के रूप में किया है।
- **डेंजिल (2015)** अपनी पुस्तक में लेखक ने महाराष्ट्र राज्य के थाणे जिले में निवास कर रहे जनजातीय समाज में चेतना के विकास का एक व्यावहारिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया है। अपने इस अध्ययन के माध्यम से लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि अपने समान सामाजिक हितों की रक्षा के लिए किस प्रकार जनजातीय समाज के लोग एक सामूहिक संगठन के माध्यम से एकत्रित होते हैं जो कि उनके मध्य सामूहिक चेतना को जन्म देता है। लेखिका ने आदिवासियों के मध्य आर्थिक रूप से उच्च्, मध्यम तथा निम्न व्यक्तियों के वर्ग चेतना को भिन्न – भिन्न बताया है। आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति स्वयं को अन्य व्यक्तियों से श्रेष्ठ मानते हैं। यहाँ सामान्य आदिवासियों कृषकों को 'लोक' और मालिकों को 'सेठ' कहा गया है। इनके मध्य सामाजिक संबन्धों की कटुता को भी स्पष्ट किया है। लेखिका ने यहाँ भी संगठनों की वर्गचेतना में महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट की है।

- **संत्संगी, हेमरॉफ (2016)** अपनी पुस्तक में लेखक ने चेतना के संदर्भ में पूर्वी/एशियाई एवं पश्चिमी अवधारणाओं का उत्कृष्ट प्रस्तुति की है। इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य विभिन्न दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों के चेतना आधारित लेखों के माध्यम से पूर्वी दार्शनिकता और धार्मिकता को पश्चिमी दार्शनिकता एवं वैज्ञानिकता से जोड़ने का एक मार्ग प्रशस्त करना है। चेतना से सम्बन्धित पूर्वी दृष्टिकोंण बौद्ध, कन्फ्यूशियस, हिन्दू, योग, इस्लाम, ताओवाद और जेन्द की आध्यात्मिक परम्पराओं से जुड़ा हुआ है जो व्यक्ति के अन्तःकरण, ब्रह्माण्डीय एकता पर ध्यान केन्द्रित करता है वहीं चेतना का पश्चिमी दृष्टिकोंण वैज्ञानिक विधि पर आधारित है जो कि ज्ञानोपार्जन के लिए तर्क एवं व्यावहारिक गतिविधियों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। जिस प्रकार पूर्वी दृष्टिकोंण अंतःवैश्विक दृष्टि पर केन्द्रित है वहीं पश्चिमी दृष्टिकोंण घटना के बाह्य रूप पर आधारित है। इस पुस्तक के माध्यम से चेतना से सम्बन्धित दो ध्रुवीय अवधारणाओं का यह एककीकरण चेतना के गहन समझ ही प्रदान नहीं करेगा अपितु मानव जीवन के आवश्यक दशाओं में भी सुधार करेगा।
- **सिद्दकी, मौ0 मज़रुद्दीन (1952)** अपनी पुस्तक में लेखक ने इस्लाम में महिलाओं की स्थिति से सम्बन्धित अत्यन्त महत्वपूर्ण दृष्टिकोंण प्रस्तुत किया है। लेखक ने यह तथ्य प्रस्तुत करते हुए कहा है कि महिलाओं की स्वतंत्रता एवं उनके अधिकारों के लिए वर्तमान समय में जो आंदोलन हो रहे हैं वे अधिकार इस्लाम ने पहले से ही महिलाओं को दिए हुए हैं अपितु पश्चिम की तुलना में इस्लाम ने महिलाओं को ऐसे अधिकार दिए हैं जो समाज में स्थिति एवं जरूरतों के अनुसार परिवर्तित किए जा सकते हैं जिनमें विवाह, तलाक सम्बन्धी अधिकार प्रमुख हैं। लेखक ने अधिकारों के क्षेत्र में पश्चिमी समाज की महिलाओं की तुलना में इस्लामी समाज की महिलाओं को अधिक समृद्धशाली बताया है।

अध्ययन के उद्देश्य

- हिन्दू एवं मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन।

- हिन्दू एवं मुस्लिम महिलाओं में चेतनात्मक स्तर पर आधुनिकीकरण के प्रभावों का अध्ययन।
- हिन्दू एवं मुस्लिम महिलाओं में धार्मिक सहिष्णुता का आधुनिकीकरण के सम्बन्ध में अध्ययन।
- हिन्दू तथा मुस्लिम महिलाओं में आधुनिकीकरण के प्रति बढ़ रही चेतनता के समक्ष आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

- हिन्दू तथा मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में भिन्नता पाई जाती है
- आधुनिकीकरण के प्रति चेतना के स्तर में हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों ही समुदायों की महिलाओं में भौतिक कारक उत्तरदायी हैं।
- आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने दोनों ही समुदायों की महिलाओं में धार्मिक असहिष्णुता की भावना को प्रबल किया है।
- हिन्दू तथा मुस्लिम महिलाओं में आधुनिकीकरण के प्रति बढ़ रही चेतना को परम्परा एवं रूढ़िवादिता से चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

पद्धति शास्त्र

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत लघु शोध की पूर्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा आगरा नगर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयन किया जायेगा।

अध्ययन का समग्र एवं निदर्श

आगरा नगर में 100 नगर निगम वार्ड हैं जिनमें से हिन्दू तथा मुस्लिम समुदायों की महिलाओं की कुल संख्या को समग्र के रूप में चयन किया जायेगा।जिसके अन्तर्गत दैवनिदर्शन

(लाटरी मैथड) द्वारा हिन्दू एवं मुस्लिम समुदायों की जनसंख्या के आधार पर 315 महिलाओं कानिदर्श के रूप में चयन किया जायेगा।

अध्ययन की इकाई

शोधार्थिनी द्वारा आगरा नगर में निवास करने वाली हिन्दू एवं मुस्लिम समुदायों के परिवारों की 15 से 45 वर्ष एवं उससे अधिक आयु वर्ग की महिलाओं का अध्ययन की इकाई के रूप में चयन किया जायेगा।

अध्ययन की शोध प्ररचना

प्रस्तुत अध्ययन की शोध प्ररचना वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक होगी। जिसके अन्तर्गत चयनित विषय की विशेषताओं का विस्तार से वर्णन किया जायेगा।

अध्ययन के स्रोत

शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन के स्रोत के रूप में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का चयन किया जाएगा। प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची, वैयक्तिक अध्ययन विधि एवं अर्द्धसहभागीय अवलोकन का प्रयोग किया जाएगा। द्वितीयक स्रोत के रूप में पुस्तकों, पत्रिकाओं व इंटरनेट तथा अन्य माध्यमों का प्रयोग किया जायेगा।

प्रस्तावित अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय – प्रस्तावना

- प्रस्तावना
- समस्या का कथन
- अध्ययन का महत्व
- साहित्य का पुनरावलोकन
- अध्ययन के उद्देश्य

द्वितीय अध्याय – शोध प्रारूप

- अध्ययन की परिकल्पना
- शोध विधि
- अध्ययन क्षेत्र एवं समग्र
- अध्ययन की इकाई
- निदर्शन विधि
- अध्ययन की प्रकृति
- अध्ययन के संयत्र
- तथ्यों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं सारणीयन
- तथ्यों का चित्रमय प्रदर्शन

तृतीय अध्याय

- हिन्दू एवं मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन।

चतुर्थ अध्याय

- हिन्दू एवं मुस्लिम महिलाओं में चेतनात्मक स्तर पर आधुनिकीकरण के प्रभावों का अध्ययन।

पंचम् अध्याय

- हिन्दू एवं मुस्लिम समुदायों की महिलाओं में धार्मिक सहिष्णुता का आधुनिकीकरण के सम्बन्ध में अध्ययन।

षष्ठम् अध्याय

- हिन्दू एवं मुस्लिम महिलाओं में आधुनिकीकरण के प्रति बढ़ रही चेतना के समक्ष आने वाली चुनौतियों का अध्ययन।
- निष्कर्ष
- संदर्भ ग्रंथ
- परिशिष्टि

  –साक्षात्कार अनुसूची

  –जनसंख्या से सम्बन्धित सारणी

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Aghababa, Hossain, (2011), "Modern Islam versus Islamic Modernity," 2nd International conference on Humanities, Historical and Social Sciences, IPEDR vol. 17, IACSITT Press.
- Ahmed, Leila, (1992), "Women and Gender in Islam: Historical Roots of a Modern Debate" Yale University Press.
- Alatas, Sayed Hussain, (1972). "Modenization and Social change", Angus and Roberston, Cremorne.
- Berger, P.L. and Luckman T. (1966), "The social construction of reality: A treaties in the sociology of knowledge", Penguin
- Blackmore, Susan, (2004), "Consciousness: An Introduction", Oxford University Press.
- censusindia.gov.in
- Cooley, C.H., (2002), "Social Consciousness", American Journal of Sociology cited by 4.
- Denzil, Saldanha, (2015), "Structure, Consciousness and Social Transformation: The Adivasis in Thane District, Maharashtra," Aakar Books.
- Deutsch, Karl. W. (1961), "Social Modernization and Political Developement", Americal Political Science Reveiw Septemeber Vol. 53. p. 493-514
- Dube, S.C., (1988), "Modernization and Developement," Vistaar Publication.
- Durkhim E., (1912), "The elementary forms of religious life," Allen and Unwin.
- Durkhim E., (1993), "The division of labour in society." (Translation and Introduction by G. Simpson), MacMillan.

- Eisenstadt, S.N., (1965), “Transformation of Social, Political and Cultural orders in Modernization”, Americal Socialogical review, Vol. 30,
- Eisenstadt, S.N., (1969), “Modernization: Protest and Change”, Prentice Hall of India.
- Engineer, Asghar Ali, (1992), “The Rights of Women in Islam” C. Hurst and Company.
- Fantasia, Rick, (1989), “Cultures of Solidarity”, University of California Press.
- Gusfield, R. Joseph, (1967), “Tradition and Modernity, Misplaced Polarities in the Study of Social Change”, American Journal of Sociology vol. 72, issue 4, pp. 351-362.
- http://computerkendra.com/parshaddetail/user/parshardetail.aspx?classno=64 http://www.foxitsoftware.com
- Husain, Abids, (1969), “Modern Trends in Islam,” Punjab University.
- Javed, M.A., Jahangir K.N. and Bose, Shankar, (2007), “Minorities of India: Problems and Perspective,” Manak Publication.
- Jha, Kaalinath, (2005), “Modernizing, Women searching their Identities,” Rawat Publication.
- Kessel, Frank S., Cole, Pamela M. Johnson, Dale L., (1992), “Self and Consciousness: Multiple Perspective,” Hillsdale, Nj.
- Khan, Mohammad Shabbir, (1996), “Status of Women in Islam,” A.P.H. Publishing Corporation.
- Kreitler, S. and O. Maimon (2012), “Consciousness: Its nature and functions,” Nova Publishers, pp. 89-105.
- Lerner, Deniel, (1966), “The Passing of Traditional Society”, Free Press.

- Levy, Jr. Marion J. (1955), "Contrasting Factors in the Modernization of China and Japan", In Economic Growth in Barzil, India, Japan, Simon Kuznets, et al. (Eds.), Duke University Press. p. 496-536.
- Locke, J., (1690), "An essay concerning human understanding," (Ed. By P. Niddich), Oxford University Press.
- Mark, K. and Engels F., (1845-46), "The German Ideology," Prometheus"s Books.
- Mead, G. H., (1934), "Mind, Self and Society: From the standpoint of a social behaviourist" University of Chicago Press.
- O" Connell, Jemes (1965), "Concept of Modenization", South Atlantic Quarterly, Vol. 64
- Panikkar, K.M., (1961), "Hindu Society at the Cross Roads", Asia Publishing House.
- Pippin, Robert, (2011), "Hegel on Self-Consciousness," Princeton University Press.
- Radice, William, (1999), "Swami Vivekananda and the Modernisation of Hinduism", SOAS studies on South Asia, Oxford University Press.
- Rahman, Fazlur, (1982), "Islam and Modernity: Transformation of an Intellectual Tradition" The University of Chicago Press.
- Rustow, D.A. and Ward, R.E. (1964), (Eds.), "Political Modernization in Japan and Turkey", Princeton University press.
- Saliba, Therese, Allen Carolyn, Howard, A. Judith, (2005), "Gender, Politics and Islam", Orient Longman.

- Satsangi Prem Saran, Hameroff Stuart, (2016), "Consciousness: Integrating Eastern and Western Perspective.
- Schutz, A. and Luckman T. (1973), "The Structure of the life world", Vol: 1, Northwestern University press.
- Shaheen, Anwar, (2009), "Patriarchal Education and Print Journalism: Their emancipating impact on Muslim Women in India during 1869 to 1968",ed. In Pakistan Journal of History and Culture vol. XXX no. 2, 2009.
- Siddiqui, Mazeheruddin, (1970), "General Characteristics of Muslim Modernism", Islamic Studies vol. 9, no. 1, pp. 33-68.
- Siddiqui, Mohammad Mazeheruddin, (1952), "Women in Islam", Director Institute of Islamic Culture, 2.
- Singh, J.P., (2012), "Adhunik Bharat me Samajik Parvartan", PHI learning Pvt. Ltd. 306
- Singh, Yogendra, (1978), "Essays on Modenization in India", Manohar Book Service.
- Singh, Yogendra, (2005), "BharatiyaParamparaka Aadhunikikaran", Rawat Publication.
- Smith, David, (2003), "Hinduism and Modernity", Blackwell Publication.
- Srinivas, M.N., (1977), "Social change in Modern India",Orient Longman.
- Srinivas, M.N., (1996), "Social change in Modern India", Allied Publishers.
- Weiner, Myron (1967), "Modernization: The Dynamics of growth", Higginbothoms.
- Zeman, Adam, (2002), "Consciousness: A Users Guide", Yale University Press.